गन्ना कृषक माह फरवरी में क्या करें !

1– शरद्कालीन व बसन्तकालीन शीघ्र पकने वाली प्रजातियों की कटाई यदि शेष रह गयी हो तो पूरी करें। उसकी पेड़ी रखने हेतु तत्काल मेड़ों को गिराते हुये ठूँठों की छँटाई करें। सिंचाई उपरान्त ओट आने पर पंक्तियों की दोनों तरफ से गुड़ाई करें तथा उसी समय 200 कि0ग्रा0 यूरिया/हे0 लाइनों में डाल दें। सूखी पत्तियों को समान रूप से दो पंक्तियों के मध्य फैला दें तथा इसके ऊपर लिन्डेन 1.3% धूल का 25 कि0ग्रा0/हे0 की दर से बुरकाव करें ताकि शेष जीवित कीट मर जायें।

2– मध्य क्षेत्र, पश्चिमी क्षेत्र में बुवाई का समय 15 फरवरी के उपरान्त आता है। अतः 30 प्रतिशत क्षेत्रफल में शीघ्र पकने वाली प्रजातियों की बुवाई हेतु को0शा0 8436, 88230, 96268, 08272, को0से0 98231, यू0पी0 05125 में से अपनी सुविधानुसार एक या दो प्रजातियों का चुनाव करें तथा शेष 70% क्षेत्रफल में मध्य देर से पकने वाली प्रजातियों का चयन करें। (उत्तर प्रदेश हेतु क्षेत्रवार संस्तुत प्रजातियों की सूची तालिका–1 में दी गई है)।

3– जलभराव वाले क्षेत्रों में फरवरी–मार्च में प्रत्येक दशा में बुवाई करनी चाहिये । जलभराव हेतु यू0पी0 9530 व को0से0 96436 प्रजातियों का चुनाव करें।

4– खेत की तैयारी के समय गोबर की खाद 18 टन या बायोकम्पोस्ट 4.5 टन या 9 टन/हे0 की दर से खेत में बिखेर कर जुताई करें। पलेवा उपरान्त पहली जुताई 30 से 35 से0मी0 गहरी करनी चाहिये।

5– फरवरी में बुवाई करने की दशा में दो पंक्तियों के मध्य 90 से0मी0 दूरी रखनी चाहिये। गन्ना शोध परिषद् द्वारा विकसित संशोधित ट्रेन्च विधि से बुवाई करें। इससे 25–30 प्रतिशत उपज बढ़ जाती है।

6– गन्ना बीज स्वीकृत पौधशाला, जिसमें पर्याप्त मात्रा में उर्वरक व पानी का प्रयोग किया गया हो, से ही लेना चाहिये। यदि सामान्य फसल से बीज गन्ना लेना हो तो कटाई से पूर्व पानी लगा देना चाहिये। छोटी पोरी वाले गन्ने की 3 ऑख एवं बड़ी पोरी वाले गन्ने की दो ऑख का टुकड़ा काटना चाहिये। टुकड़ों को माह जनवरी में वर्णित रसायन से उपचारित करके ही बोयें तो जमाव अच्छा होगा।

7– मृदा परीक्षण के आधार पर अथवा कुल नत्रजन का 1/3 (60 कि0ग्रा0/हे0) एवं फास्फोरस 60 कि0ग्रा0, पोटाश 20 कि0ग्रा0 बुवाई के समय कूँड़ों में पहले प्रयोग करें। उर्वरक डालने के बाद उसके ऊपर थोड़ी मिट्टी गिरायें उसके बाद प्रति फुट 3 ऑख का एक पैंड़ा बोयें। प्रति मीटर 10 ऑख की बुवाई करें। पैड़ों के ऊपर दीमक व अंकुर बेधक के नियंत्रण हेतु माह जनवरी में उल्लिखित कीटनाशकों में से किसी एक का प्रयोग कर ढकाई करें।

8– अन्तः फसल होने की दशा में यदि फसल तैयार हो गयी हो तो उसकी शीघ्र कटाई करें तथा तत्काल सिंचाई करके उर्वरक प्रयोग करते हुये गुड़ाई करें। गेहूँ की फसल में सिंचाई करें।

9– शरद्कालीन बावग गन्ने में सिंचाई कर 60 कि0ग्रा0 नत्रजन/हे0 (132 कि0ग्रा0 यूरिया) की पहली टॉपड्रेसिंग करें।

10– मध्य देर से पकने वाली प्रजातियों के बावग गन्ने की कटाई मध्य फरवरी से प्रारम्भ करें तथा तत्काल उसकी पेड़ी रखने हेतु कर्षण क्रियायें माह जनवरी में वर्णित विधि के अनुसार करें।

11– फरवरी माह में बुवाई करने की दशा में मूँग या उर्द अन्तः फसल की बुवाई करें। इस समय भिण्डी की भी अन्तः खेती करना लाभकारी होगा।

पहले मिट्टी जॉच करायें। खेतों में फिर खाद लगायें।।